आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारम्।।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 4 बीकानेर, दिसम्बर, 2014 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

जैविक पशुपालन– समय की मांग

वर्तमान में खाद्य सुरक्षा मनुष्य, जाति और पशु जगत के लिए एक अहम विषय है। निरोगी, स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए उपभोक्ताओं को जैविक खाद्य उत्पाद मुहैया करवाना अब हमारी पहली प्राथमिकता में शामिल है। खेती–बाड़ी में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरक के अंधाधुंध प्रयोग के दुष्परिणाम शारीरिक रूग्णता और जान लेवा बीमारियों के रूप में सामने आ रहे हैं। मृदा स्वास्थ्य भी गड़बड़ा रहा है। इनसे बचने के लिए जैविक खेती के साथ साथ जैविक पशुपालन की ओर जाना समय की मांग है। पशुधन उत्पादों में डेयरी के उत्पाद, मांस, अंडा जैसे खाद्य पदार्थ शामिल हैं। हमारे यहां सदियों से चली आ रही पारंपरिक खेती के खाद्य और वर्तमान में यांत्रिकी और रसायनों के उपयोग वाले खाद्य पदार्थों के पोषक तत्वों के तुलनात्मक अध्ययन में जैविक पशुपालन में प्रति जैविक और हानिकारक कीटनाशकों और वृद्धि हार्मोन रहित उत्पाद अधिक लाभकारी सिद्ध हुए हैं। आनुवांशिक परिवर्तित जीन, कृत्रिम सुंगध, संश्लेषित रंग और संरक्षक रहित तथा हाइड्रोजीनेटेड और आंशिक हाइड्रोजीनेटेड तेल रहित उत्पाद ही हमारे स्वास्थ्य हित में हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय जैविक पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर (बीकानेर) में भेड़ और बकरियों के लिए पृथक से जैविक पशुपालन पद्धति से लालन–पालन का केन्द्र स्थापित कर रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा हरे चारे से पोलीबेग विधि द्वारा साइलेज के रूप में संरक्षित करने की तकनीक एवं हाइड्रोपोनिक्स विधि द्वारा मृदा रहित कल्वर तकनीक का भी कार्य किया जा रहा है। इन दोनों तकनीकों से जैविक हरा चारा उत्पादन किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक विकसित करने हेतु एक केन्द्र स्थापित किया गया है। इस केन्द्र द्वारा कोडमदेसर स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर जैविक मांस एवं दुग्ध उत्पादन का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण इकाई स्थापित की जा रही है, ताकि किसानों को कम लागत में मूल्य संवर्द्धित जैविक पशुधन उत्पाद पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इन प्रयासों से पशुपालकों के बीच जैविक पशुपालन की ओर रूझान बढ़ेगा, ऐसी मेरी मान्यता है। ऐसे उत्पादों की मांग है और ये अधिक मुनाफा देने वाले हैं। पशुपालकों को इस ओर तेजी से बढ़ने के लिए विश्वविद्यालय हर स्तर पर सहयोग को तैयार है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

डॉ० संजीव कुमार बालियान
DR. SANJEEV KUMAR BALYAN

राज्य मंत्री,
कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
भारत सरकार
Minister of State for
Agriculture & Food Processing Industries,
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किसानों और पशुपालकों के हित में **"पशुपालन नए आयाम"** के प्रकाशन का एक वर्ष पूरा हो गया है।

पशुपालन राजस्थान की अर्थव्यवस्था और खासतौर पर ग्रामीण जनों की आजीविका का एक प्रमुख साधन है। राज्य के किसानों और पशुपालकों ने विपरीत जलवायु परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं में भी पशुपालन के सहारे जीवनयापन करने में क्षमता अर्जित की है। पशुपालन में पुरातन ज्ञान के साथ ही उन्नत पशु नस्ल संवर्द्धन और पशु उत्पादों के प्रसंकरण के लिए आधुनिक तकनीक, नवाचारों और वैश्विक कार्यशैली का समावेश किया जाना, समय की जरूरत है। मुझे आशा है कि "पशुपालन नए आयाम" में प्रकाशित उपयोगी जानकारी पशुपालक समुदाय में वैज्ञानिक द्रष्टिकोण और पशुपालन की नवीन तकनीक को तेजी से अपनाने की प्रेरणा देगी। इसी में हम सबका हित निहित है।

इसके सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से विश्वविद्यालय प्रशासन एवं इससे जुड़ी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(डॉ. संजीव कुमार बालियान)

मुख्य समाचार

राजुवास प्रदर्शनी प्रथम स्थान पर

बीकानेर। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर (टोंक) में राष्ट्रीय भेड़ एवं ऊन विकास मेला व किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मेले में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर के संस्थान/विश्वविद्यालय/कृषि विज्ञान केन्द्र एवं अन्य विभागों द्वारा विकसित तकनीक पर प्रदर्शनी लगायी गई। इस मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास की तरफ से एक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रो. त्रिभुवन शर्मा, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास के नेतृत्व में लगाई गई इस प्रदर्शनी को श्री प्रभुलाल सैनी, माननीय मंत्री, कृषि,पशुपालन एवं मत्स्य विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्यामपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

बीकानेर। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया द्वारा 17 नवम्बर को गांव श्यामपुरा (लाडनू) जिला नागौर में पशु आहार व चारा प्रबंधन की भूमिका विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। पशुधन सम्पदा के लिए पर्याप्त भोजन व संतुलित आहार की आपूर्ति हेतु किसानों को पशु आहार की उपयोगिता व चारा प्रबंधन की जानकारी होना आवश्यक है। गरीब और भूमिहीन पशुपालकों के लिए पशु आहार की संतुलित मात्रा व चारा संरक्षण की वैज्ञानिक तकनीक अत्यंत उपयोगी है। सहायक आचार्य डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को संतुलित पशु आहार में पदार्थों की मात्रा मौसम, पशु के भार व उसकी उत्पादन क्षमता के अनुसार रखने की जानकारी दी। इस शिविर में लगभग 50 पशुपालकों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
NATIONAL DAIRY RESEARCH INSTITUTE
(मान्य विश्वविद्यालय)
(Deemed University)
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
(Indian Council of Agricultural Research)
करनाल–132001, (हरियाणा) भारत
KARNAL- 132001, (Haryana) India

प्रोफेसर (डा.) ए. के. श्रीवास्तव
निदेशक
Prof. (Dr.) A. K. Srivastava
Director

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि राजभाषा पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, द्वारा प्रसार शिक्षा के तहत राज्य के डेरी–कृषकों के हित में प्रकाशित पत्रिका **"पशुपालन नए आयाम"** ने सफलतापूर्वक एक वर्ष पूर्ण कर लिया है और इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

आदिकाल से कृषि और पशुपालन हमारी सभ्यता, संस्कृति के अभिन्न अंग रहें हैं। देश की अर्थव्यवस्था और प्रगति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डेयरिंग एक सफल उद्योग, रोजगार एवं आय बढ़ाने के महत्वपूर्ण साधन के रूप में फलफूल रहा है। आज भारत दुग्ध–उत्पादन के क्षेत्र में विश्व के आगंन में सबसे आगे खड़ा हुआ है, परन्तु अभी प्रतिपशु दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा श्रेष्ठ गुणवत्ता वाला दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद बनाने के क्षेत्र में और अधिक प्रयास करने हैं, जिससे भविष्य में हम डेयरिंग के क्षेत्र में अग्रगण्य रहें।

यद्यपि दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है, परन्तु शोध प्रयासों, तकनीकी विकास तथा कृषकों के हाथों तक तकनीकी सौंपने के अथक प्रयास निरन्तर किये जाते रहने चाहिए।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में पशुपालकों एवं डेरी उद्योगकर्त्ताओं के लिए विशेष लाभप्रद सिद्ध होगी।

इस पत्रिका के एक वर्ष पूर्ण सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(ए.के.श्रीवास्तव)

दूरभाष/Tel. : 0184-2252800/ 2259002/ 2259004 (O)
0184-2271612/ 2259406 (R)
एक्सचेंज/Exch. : 2250366/ 2250716, ईपीएबीएक्स/EPABX :1002/ 1004 (O)
फैक्स/Fax : 0184-2260042
ई.मेल/e-mail : dir@ndri.res.in
dir.ndri@gmail.com

कसुम्बी में पशुओं को मद में लाने का पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

बीकानेर। वीयूटीआरसी बाकलिया द्वारा कसुम्बी गांव में दुधारू पशुओं के मद (गरमी) में न आने की समस्या व समाधान विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सह आचार्य डॉ. कमल पुरोहित ने पशुपालकों को जानकारी देते हुए बताया कि गायों में मद चक्र 18–24 दिन का होता है इसके प्रथम चरण को इस्ट्रस कहा जाता है इसकी अवधि 4–24 घंटे होती है। इसके बाद भी लम्बे समय तक मद(गरमी) में न आना प्रजनन संबंधी गम्भीर समस्या होती है। डॉ. पुरोहित ने बताया कि इस समस्या के समाधान हेतु पशु में मद के लक्षणों का सटीक परीक्षण, सही समय पर पशुचिकित्सक द्वारा रेक्टल परीक्षण, दुग्ध प्रोजेस्टरोन परीक्षण द्वारा जांच तथा पशु आहार में शुष्क पदार्थों की उचित मात्रा, खनिज मिश्रण आदि खिलाना प्रमुख है।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

भैंसों में गलघोंटू रोग एवं टीकाकरण से प्रतिरक्षण पर अध्ययन

राजस्थान में गाय, भैंस तथा ऊंटों में गलघोंटू रोग पाया जाता है। इस रोग से सर्वाधिक मृत्यु दर अधिक दूध देने वाली भैंसों में पाई जाती है। अतः भैंसों में गलघोंटू रोग के कारक जीवाणु की प्रकृति तथा गलघोंटू के टीके से उत्पन्न प्रतिरक्षा स्तर को जानने हेतु अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में सीकर एवं उदयपुर जिलों में गलघोंटू रोग से मृत भैंसों से रोग जीवाणु के प्रकृति के अध्ययन हेतु सेम्पल लिये गये साथ ही गलघोंटू टीके से उत्पन्न प्रतिरक्षा स्तर की जांच हेतु विश्वविद्यालय के वल्लभनगर स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र के भैंसों के रक्त नमूनों की जांच की गई। गलघोंटू रोग से मृत भैंसों के नमूनों में रोग कारक जीवाणु की पहचान पाश्चुरैला मलटोसिडा के रूप में की गई जिसके साथ कोई अन्य सह–रोग कारक जीवाणु नहीं पाये गये। इस जीवाणु की प्रकृति भी अति रोग की ही पाई गई। गलघोंटू के विरूद्व टीकाकरण की गई भैंसों के रक्त नमूनों से यह सिद्व हुआ कि इस टीकाकरण से सभी भैंसें सुरक्षित पाई गई जिसमें 77 प्रतिशत भैंसें अति सुरक्षित स्तर की पाई गई। अध्ययन से यह सिद्व हुआ है कि राजस्थान में पाये जाने वाले गलघोंटू रोग के कारक जीवाणु अति रोगकारी हैं तथा इस रोग में संतोषजनक रूप से टीकाकरण द्वारा बचाव किया जा सकता है।

अग्रेषक– राजेन्द्र कुमार मुख्य उपदेष्टा– प्रो. फखरूदीन

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-दिसम्बर, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुँहपका रोग (FMD)	गाय, भैंस, बकरी	अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, चित्तौ डगढ़, हनुमानगढ़, जालोर, कोटा, नागौर, राजसमन्द, सीकर, श्रीगंगानगर, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	अलवर, भीलवाड़ा, चित्तौडगढ़, दौसा, धौलपुर, जयपुर, टों क, सीकर
ठप्पा रोग (लंगड़ा रोग) (Black Quarter)	गाय	चित्तौड़गढ़
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	कोटा, पाली, सीकर, टौंक
माता रोग (Pox)	ऊँट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर
अश्वों में इन्फ्लूएंजा रोग	घोड़ा	अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर
न्यूमोनिक पास्चूरेल्लोसिस संक्रमण	गाय, बकरी, भेड़	अजमेर, उदयपुर, चित्तौडगढ़, बीकानेर
माईकोप्लाज्मा (CCPP)	बकरी, भेड़	अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर
सर्रा (ट्रिपेनोसोमियेसिस)	ऊँट	हनुमानगढ़, कोटा, अजमेर
बोटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, जोधपुर
फेसियोलियेसिस (अंतपरजीवी रोग)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	सीकर, कोटा धोलपुर, बून्दी

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यो से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु शरीर रचना एवं औतिकी विभाग

ऐतिहासिक भवन में स्थापित पशु शरीर रचना औतिकी विभाग

वेटरनरी विश्वविद्यालय का पशु शरीर संरचना विभाग, बीकानेर रियासतकालीन स्टेट लाइब्रेरी के लिए बने हेरिटेज महल में स्थित है। दुलमेरा के पत्थर में नक्काशी से बने जाली–झरोखे, विशाल हॉल और गलियारों से भवन की भव्यता झलकती है। पृथक रूप से वर्ष 1966 से इसमें यह विभाग कार्यशील है। पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान के स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर पशुओं की स्थूल संरचना अध्ययन औतिकी और औतिकी रसायन की सामान्य जानकारी देकर उनका प्रयोग पशुओं के उपचारीय उत्पादकीय क्षेत्रों में उत्कृष्ट ढंग से करना है। विभाग में पालतू और वन्य पशुओं के अंगों पर स्थूल व औतिकी अध्ययन के लिए अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित विच्छेदन कक्ष, अस्थि प्रयोगशाला, वातानुकूलित औतिकी सरंचना एवं औतिकी रसायन की प्रयोगशाला, स्नातकोत्तर अध्ययन और भ्रूणकीय प्रयोगशालाएं अलग–अलग हैं। छात्र–छात्राओं के प्रायोगिकी अध्ययन के लिए पशुओं के फाईबर ग्लास से बने विभिन्न अंगों के मॉडल और सम्पूर्ण गाय का मॉडल यहां के म्यूजियम की खासियत है। वन्य जीवों में भालू, चीता, ऑस्ट्रीय और लोमड़ी के कंकाल भी हैं। विभाग द्वारा अब तक 26 स्नातकोत्तर और एक शोध छात्र को प्रशिक्षित किया है। राज्य सरकार की दो अनुसंधान परियोजनाओं के तहत ऊंट व पाडे की त्वचा पर शोध कार्य किया गया है। राज्य के संरक्षित वन्य प्राणियों पर भी शोध कार्य किया जा रहा है। चीतल, चिंकारा व चीता आदि के कंकालों व अन्य अंगों की स्थूल व औतिकी संरचना पर शोध हो चुका है। इसी क्रम में अन्य वन्य प्राणियों की संरचना शोध के लिए वन्य प्राणियों का डाटा बैंक बनाने की योजना है। विभाग द्वारा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 100 अनुंसधान पत्र प्रस्तुत करके 416 पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया है। ख्यातिनाम पशु शरीर संरचना शास्त्रियों में कर्नल ए.सी.अग्रवाल, डॉ. मोहनसिंह, डॉ. के.के.व्यास, डॉ. एस.एस.सोलंकी, डॉ. यू.बी.सिंह, डॉ. एम.एल.माथुर और डॉ. कल्याण सिंह देवड़ा ने विभाग को अपना नेतृत्व प्रदान किया है। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक डॉ. जे.डी. ग्रासमेन ने यहां ऊंटों पर अनुसंधान कार्य करके एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है।

पशुओं के उपचार में भ्रांतियों का वैज्ञानिक निराकरण

पशुओं में रोगों के उपचार को लेकर टोने टोटके या गैर वांछित उपायों को काम में लिया जाना न्यायोचित नहीं है। इससे पशुओं को राहत नहीं मिलती, क्योंकि ये आधारहीन और ढ़कोसला मात्र हैं। कुछ पशुपालक अज्ञानतावश ऐसे कुछ अवैज्ञानिक उपाय कर बैठते हैं जिसके कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। कुछ ऐसी ही भ्रांतियों का जिक्र यहां किया जा रहा है,जिनका रोग निवारण में कोई योगदान नहीं है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि वे इन भ्रांतियों से दूर रहकर वैज्ञानिक सोच और सलाह से ही पशुओं का उपचार करें।

1. दस्त होने पर भेड़-बकरियों के पूंछ पर लाल रंग का धागा/डोरा बांधना

पशु की पूंछ पर डोरा बांधने से पूंछ में रक्त का प्रवाह प्रभावित होता है और ऐसी संभावना बनती हैं जिसमें डोरी के पीछे की पूंछ सूख जाती हैं, इसे वैज्ञानिक भाषा में ''गेंग्रीन'' कहते हैं। इसका इलाज ऑपरेशन द्वारा ही संभव है। इसलिए जब कभी पशु में दस्त हो तो उसकी पूंछ में ड़ोरा न बांधे, ऐसा करके आप दस्त का इलाज तो नहीं कर रहे, साथ ही साथ दूसरी बीमारी को भी निमंत्रण दे रहे हैं।

2. थनैला रोग होने पर पशु के पैर में माता जी का धागा बांधना

पशुपालकों में ऐसी भ्रांति है कि ऐसा करने से थनों की सूजन पैर में चली जाती है। डोरा बांघने से पैर में रक्त के प्रवाह पर विपरीत असर पड़ता है और पैर में सूजन आ जाती है। परन्तु रोग का उपचार नहीं हो पाता ।

3. पूंछ में गेंग्रीन होने पर जलाने का कुकृत्य

कई बार पशुओं की पुंछ मे गेंग्रीन होने पर प्रभावित भाग को खौलते हुए तेल में डाल दिया जाता है। ऐसा करना बिल्कुल गलत और पशुओं के प्रति क्रूरता का परिचायक है।

4. फूंका या धूमदेव

दूध दुहते समय पशु के जननांगों में लकड़ी की छड़ डालने को फूंका या धूमदेव कहकर पशु का दूध बढ़ाने की भ्रांति फैली है। परन्तु ऐसा करने से पशु में सक्रंमण हो सकता है एंव उसके भीतरी अंगों को चोट लग सकती हैं, ऐसा करना सही नहीं बल्कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अन्तर्गत अपराध है।

5. डाम लगाना/दागना

पशुओं में लम्बी बीमारी होने पर अथवा लम्बे समय तक बुखार होने पर लोहे की वस्तु को गर्म करके शरीर के किसी भी हिस्से पर लगा दिया जाता है। इस प्रकार करने से बीमारी ठीक नहीं होती और पशु को अनावश्यक असहनीय दर्द सहना पड़ता है। इसके कारण बने घाव में संक्रमण फैलने से पशु और ज्यादा बीमार हो जाता है। डाम लगाने की अपेक्षा लंबी बीमारी में आप अपने पशु को कुशल पशु चिकित्सक को दिखलायें और उसके खून, मल एंव मूत्र की जांच करवा कर उपचार करें।

6. शरीर पर चीरा लगाना

कई बार यह देखने में आया है कि पशु की बीमारी किसी दूसरे अंग में होती है और उसके कान या पूंछ अथवा अन्य किसी स्थान पर इस आशय से चीरा/कट लगाया जाता है कि शायद वहां से बहने वाले खून में रोगकारक दूषित पदार्थ बाहर निकल जाये जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता है, चूंकि चीरा चमड़ी तक ही सीमित होता हैं अतः निकलने वाला रक्त स्त्राव शिराओं से होता है जो प्राकृतिक रूप से सदैव धमनियों के रक्त के मुकाबले गहरे रंग का होता है। इस प्रकार से चीरा/कट लगाने से हम पशु को उसके मूल रोग के साथ ही अतिरिक्त एक ओर पीड़ा दे देते हैं।

—डॉ सुनीता पारीक, डॉ बरखा गुप्ता (मो.न. 9414857704) वेटरनरी महाविद्यालय, नवानिंया

पशुओं में अन्तःपरजीवियों से बचाव का प्रबन्धन

पशुओं में पेट के कीड़े एवं अन्य अन्तःपरजीवी एक बहुत बड़ी समस्या है। इन अन्तः पर जीवियों के कारण प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता हैं। अप्रत्यक्ष रूप से होने वाले नुकसान में उत्पादन में कमी (दूध,ऊन,मांस) गर्भधारण की समस्या एवं संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता मुख्य रूप से शामिल है। अन्तः परजीवी से प्रभावित मुख्यतया छोटे पशुओं में मौत होना प्रत्यक्ष आर्थिक नुकसान के रूप में देखा जाता है। अन्तः परजीवी से प्रभावित पशुओं में त्वचा व बालों में चमक की कमी होना, खून की कमी, त्वचा के नीचे पानी एकत्र होना एवं दस्त लगना मुख्य लक्षण होते हैं। व्यस्क अन्तः परजीवी शरीर के अंदर अंडे देते हैं जो गोबर के साथ बाहर आकर चारागाह, चारा–पानी इत्यादि को संक्रमित करते हैं। संक्रमित चारे को चरने से एवं संक्रमित पानी को पीने से स्वस्थ पशु अन्तः परजीवियों से प्रभावित हो जाते हैं। तालाब, पोखर, नदी इत्यादि के किनारे उपस्थित घोंघों में भी कुछ अन्तः परजीवियों के जीवन चक्र की कई अवस्थायें होती हैं। इस प्रकार घोंघे भी इन परजीवियों के जीवन चक्र में शामिल होकर परजीवियों की संख्या बढ़ाने में मदद करते हैं।

पशुपालकों को अधिकांशतः चारा–पानी संक्रमित होने का पता नहीं चल पाता है, इस कारण इन परजीवियों के नियंत्रण करने पर ध्यान नहीं जाता है। अन्तः परजीवियों के नियंत्रण के लिए पशुपालक को चाहिए कि वो अपने पशुओं को नियमित रूप से साल में कम से कम दो बार आवश्यक रूप से कृमिनाशक दवा पिलायें। कुछ दवाईयां इंजेक्शन के रूप में भी आती हैं जिनका प्रयोग पशुचिकित्सक की देख–रेख में किया जा सकता है। पशुपालकों को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि लगातार एक ही दवाई का प्रयोग करने से दवा परजीवियों पर बेअसर हो जाती है। अतः पशुपालक भाई पशु चिकित्सक की मदद से अलग–अलग समय पर अलग तरह की कृमिनाशक दवाओं का प्रयोग करें। पशुपालक यह भी ध्यान रखें कि सभी पशुओं को कृमिनाशक दवाई एक साथ ही पिलाई जाये। तालाब, पोखर, नदी इत्यादि के पास उपस्थित घोंघों के नियंत्रण के समुचित उपाय भी करने चाहिए, ताकि परजीवियों के जीवन चक्र में रूकावट आये व उनकी संख्या कम हो। अपने पशुओं को अन्तः परजीवी मुक्त रखने से छोटे पशुओं की बढ़ोतरी अच्छी होती है। वयस्क पशुओं से बेहतर उत्पादन (दूध,ऊन,मांस) मिलता है। मादा पशुओं में गर्भधारण करने की दर बढ़ती है एवं परजीवी रहित पशुओं की बीमारियों से लड़ने की क्षमता अधिक होती है।

– प्रो. ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

जैविक पशुधन का उत्पादन कैसे करें ?

हमारा देश विश्व में पशुधन संख्या व दुग्ध उत्पादन में प्रथम है। हरित क्रान्ति से हम अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गये हैं लेकिन रसायनिक खादों, कीट नाशकों, पीडकनाशी, खरपतवार व अन्य रसायनों के अन्धाधुंध उपयोग करने के कारण इनके अवशेष मिट्टी, पानी, चारा आदि में आ जाते हैं। पशुओं द्वारा ऐसा चारा–पानी उपयोग में लेने पर ये उनके शरीर में जमा होने लगते हैं, एवं ये अवशेष खाद्य श्रृखंला द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। इन पदार्थो के अलावा पशुओं के उपचार में ली जा रही दवाईयां जैसे ऐन्टीबायॉटिक्स, अन्य हार्मोन्स आदि के उपयोग ने आग में घी का कार्य किया है। मनुष्य द्वारा ऐसे पशुधन उत्पादों जैसे दुग्ध, मांस, अण्डे आदि के उपयोग में लेने के कारण अनेक बीमारियां हो रही हैं। इसके दुष्प्रभावों को कम अथवा समाप्त करने का एकमात्र उपाय जैविक कृषि एवं जैविक पशुधन उत्पादन को बढ़ावा देना है।

जैविक पशुधन उत्पादन कैसे करें !

जैविक पशुधन उत्पादन के लिए मिट्टी, चारा, पानी आदि का किसी भी प्रकार के रसायन एवं संश्लेषित पदार्थों से पूर्णतः मुक्त होना जरूरी है।

1. **जैविक चारा उत्पादनः–** पशुओं को जैविक चारा–आहार दिया जाना चाहिए जो कि पूर्णतः रसायनिक खाद, कीटनाशकों एवं खरपतवार नाशकों से मुक्त हो। पशुपालकों को चाहिए कि चारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए रसायनिक उर्वरक की जगह जैविक खाद जैसे गोबर खाद, वर्मी कम्पोस्ट एवं केंचुआ खाद का उपयोग करना चाहिए। कीटों एवं पीड़कों के नियंत्रण हेतु फसल चक्र, मित्र कीटों का, कीटभक्षी पक्षियों एवं भौतिक साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए। पशुओं में अधिक वृद्धि प्राप्त करने हेतु ऐन्टीबायॉटिक्स, वृद्धि हार्मोन्स एवं अन्य रसायनों की जगह जैविक खाद युग्मज का उपयोग किया जाना चाहिए

2. **जैविक पानीः–** पशुओं को जहां तक सम्भव हो रसायन मुक्त पानी पिलाना चाहिए। इसके लिए पशुपालक बारिश का पानी कुण्ड में एकत्रित कर पशुओं को पिला सकते हैं

3. **बीमार पशुओं का जैविक उपचारः–** पशुओं का प्रबंधन व पोषण इस प्रकार किया जाये कि उनमें कम से कम बीमारियां फैले। उचित प्रबंधन एवं पोषण पशुओं को अधिकांश बीमारियों से बचा लेता है, परन्तु फिर भी पशुओं में यदि कोई रोग होता है तो आर्युर्वेदिक एवं होमियोपैथिक दवाओं से इलाज करवाना चाहिए। अति आवश्यक होने पर ही ऐलोपैथिक दवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए

4. **जैविक पशुधन उत्पादों का महत्वः–** हानिकारक रसायनों से युक्त चारा पानी एवं दवाईयों के अनावश्यक उपयोग के कारण पशुओं एवं अन्य जीवों में अनेक बीमारियां जैसे कि कैंसर, एलर्जी, रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम होना, गर्भपात होना, बांझपन होना एवं स्नायुतंत्र, पाचन तंत्र की बीमारियां हो जाती हैं। अगर हम जैविक पशुधन उत्पादन को बढ़ावा देते हैं तो ऐसी बीमारियों एवं दुष्प्रभावों से बच सकते हैं। साथ ही जैविक पशुधन उत्पादों के उपयोग से अतिरिक्त लाभ भी होता है। जैविक पशुधन उत्पाद सामान्य पशुधन उत्पादों से अधिक पोषक एवं गुणवतापूर्ण होते हैं। मानव शरीर के लिए आवश्यक वसा अम्ल, एन्टीऑक्सीडेन्टस, विटामिन्स एवं खनिज तत्व भी जैविक पशुधन उत्पादों में अधिक मात्रा में होते हैं। अगर हम जैविक पशुधन उत्पादों को बढ़ावा देते हैं तो यह पर्यावरण के लिए लाभकारी है और जैव विविधता पारिस्थिकी संतुलन एवं प्राकृतिक आपदाओं से भी बचा सकते हैं।

–डॉ. विजय कुमार, डॉ. राजेश नेहरा, राजुवास (09461504858)

सफलता की कहानी

पशु आहार प्रौद्योगिकी व गुणवत्ता प्रशिक्षण के सकारात्मक परिणाम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर में ''खाद्य प्रौद्योगिकी इकाई'' के माध्यम से स्वस्थ पशुधन और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के प्रयासों के सकारात्मक नतीजे मिल रहे हैं। वर्ष 2010–11 से पशुआहार प्रौद्योगिकी एवं गुणवत्ता परियोजना के तहत अब तक 933 प्रशिक्षुओं को इससे लाभान्वित किया गया है। इस प्रशिक्षण में कृषि एवं पशुपालक क्षेत्र से जुडे विभिन्न सरकारी अधिकारी, कर्मचारी (पशुपालन विभाग, डेयरी विभाग, जल ग्रहण इत्यादि संबंधित विभाग), कृषि विज्ञान केन्दों से जुड़े वैज्ञानिक एवं कर्मचारीगण, विभिन्न गैर सरकारी संगठन एवं स्वंय सहायता समूह से सम्बद्ध कार्यकर्ता, ग्रामीण युवक एवं उन्नत कृषक लाभान्वित होते हैं। इस परियोजना के द्वारा विभिन्न समूहों को पशु आहार द्वारा पशु उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रशिक्षित व समृद्ध किया जाता है जिससे राजस्थान जैसे प्रांत में अकाल के समय में उचित तकनीक अपनाकर पशु आहार की गुणवत्ता को बनाए रख सके। संस्थान ने ग्राइन्डर, मिक्सर, ब्लॉक मशीन, यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक मशीन जैसे उपकरणों से प्रायोगिक क्रिया विधि से प्रशिक्षणों का आयोजन किया है। इसमें यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक बनाना तूड़ी का यूरिया द्वारा उपचार, साइलेज व पैलेट व सम्पूर्ण आहार ईंट बनाने जैसे कार्य शामिल हैं। पशुपोषण के क्षेत्र में उपलब्ध तकनीकी ज्ञान और उसकी गुणवत्ता के महत्व को पशुपालन से जुड़े लोगों और अधिकारियों तक पहुंचाने के अपने लक्ष्य में जुड़ा हुआ है। पशुआहार के तकनीकी ज्ञान का प्रशिक्षण और तकनीकी माड्यूल तैयार कर जानकारी देने से अकाल व सूखे जैसी विषम परिस्थितियों से पशुधन को बचाये रखने में मदद मिलती हैं। इस परियोजना में पशु आहार की गुणवत्ता और खाद्य मानकों के बारे में भी कृषकों और पशुपालकों को जानकारी दी जा रही है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षुओं को तकनीकी बुलेटिन और पुस्तिकाओं के रूप में मुद्रित सामग्री भी प्रदान की जा रही है। इसमें सरल और सचित्र पशु आहार ज्ञान, पशुआहार प्रौद्योगिकी एवं ग्रामीण स्वरोजगार, साईंस एण्ड आर्ट ऑफ फीड फार्मुलेशन तथा बाडी कंडीशन स्कोरिंग (ए मैनेजमेन्ट टूल फॉर न्यूट्रिशन एसेसमेन्ट) जैसे प्रकाशन शामिल हैं। उत्तम पशुआहार देकर ही दुधारू पशुओं से अधिक दूध उत्पादन और अन्य पशु उत्पादों की उम्मीद की जा सकती है। गुणवत्तापूर्ण पौष्टिक आहार और हरे चारे को खिलाने से स्वस्थ, और रोगों से मुक्त पशुधन हमारे लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

प्रो. विष्णु शर्मा (9460387949)

रोगग्रस्त व निरोगी मुर्गियों की पहचान

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। अकाल के समय यहां रोजगार एवं जीवनयापन की विकट समस्या उत्पन्न हो जाती है। राजस्थान जैसे प्रदेश में जहां अकाल नीयती बन चुका है वहां कुक्कुट पालन एक लाभदायक उद्योग के रूप में मुर्गी पालकों के लिए आजीविका का उत्तम साधन सिद्ध हो सकता है। मुर्गी पालन व्यवसाय को शुरू करने के पहले मुर्गी पालक को कुक्कुट के बारे में समस्त जानकारी होनी आवश्यक है जिससे मुर्गी पालन व्यवसाय को वैज्ञानिक पद्धति से पालकर उससे अधिक लाभ कमा सकें। लेकिन वर्तमान परिपेक्ष्य में मुर्गीपालक आधी जानकारी के अभाव में या अपने पड़ोसी को देखकर जल्दबाजी में मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू कर देता है, जिसका हश्र नुकसान में परिणित तो होता है व अन्य मुर्गीपालकों को व्यवसाय अपनाने से हतोत्साहित करता है। मुर्गीपालन व्यवसाय शुरू करने के पूर्व स्वस्थ कुक्कुट व अस्वस्थ कुक्कुट के बारे में जानकारी रखना महत्वपूर्ण व लाभकारी है।

स्वस्थ मुर्गियों के लक्षणः– वह दाना चुगने में व्यस्त रहती है, फुर्तीलापन, चैतन्यता एंव हाथ से पकड़ने पर भार मालूम होना, संघर्ष करना एंव उठाते समय टांगों में प्रचलन शक्ति का आभास, पंखों का रंग साफ सुथरा, दाना खाने की इच्छा बनी रहना, मल सफेद, मटमेले भूरे रंग का बंधा हुआ, अधिक प्रकाश की स्थिति में तत्काल नेत्रों को व्यवस्थापन, नाक स्वच्छ व साफ, कंलगी साफ व चमकदार लाल

अस्वस्थ मुर्गियों के लक्षणः– उठाते समय संघर्ष न करना, पंखों को झुकाये हुए सुस्त बैठे रहना, कंलगी सिकुडी तथा मुरझाई हुई पीले या नीले रंग की, भार में कमी, फीड नहीं उठाना, दस्त हरे, पीले रंग की या लाली लिये हुए, मुर्गियों का झुण्ड में इकठ्ठा होना, लंबी–लंबी सांस लेना, आवाज होने पर चंचलता का अभाव, बीट वाली जगह पर बीट का चिपकना, नासा छिद्र पर गंदगी का जमा होना, उदर का फूलना, चोंच को मिट्टी में डालकर रखना।

बीमार बच्चों के लक्षणः– ब्रूडर हाउस में बच्चे बिजली के बल्ब के पास इकठ्ठा हुए एक दूसरे से सिमटे हुए दिखाई पड़ते हैं मानो कि अधिक ठंड है, कुछ बच्चे अधिक चीं–चीं की आवाज करते है मानो बहुत संकट में है, सांस कठिनाई से लेते हैं, दस्त सफेद करना जिससे बीट करने का स्थान गंदा दिखाई देता है, पानी का अधिक पीना, बच्चे सुस्त, निर्बल दशा में दिखाई देना।

मुर्गी पालकों को स्वस्थ–अस्वस्थ मुर्गियों के लक्षणों से पूर्ण रूप से परिचित हो जाना चाहिए। जिससे अस्वस्थ लक्षणों के दिखाई देने पर तुरंत अपने नजदीकी चिकित्सा केन्द्र से संपर्क कर अपनी मुर्गियों का अतिशीघ्र इलाज करें जिससे मुर्गी पालन व्यवसाय में नुकसान की संभावना को कम करके अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके।

–डॉ. तारा बोथरा, डॉ. दिनेश जैन एवं डॉ. रजनी अरोड़ा, राजुवास,बीकानेर (मो.09413792663)

निदेशक की कलम से...

पशुओं को संतुलित आहार देकर उत्पादन बढ़ाएँ

पशुधन संपदा से अधिक उत्पादन लेना हर एक पशुपालक का प्रमुख उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए दुधारू पशुओं को संतुलित आहार दिया जाना आवश्यक है। पशुओं के रखरखाव में प्रायः 60 से 65 प्रतिशत खर्च पोषण पर ही होता है। संतुलित आहार में चारे व दाने का वह मिश्रण होता है जिससे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज तत्व और विटामिन की उचित मात्रा एक निश्चित अनुपात में होनी चाहिए। संतुलित पोषण के अभाव में पशु दुर्बल, बीमारियों से बचाव की क्षमता में कमी तथा बछड़ियों की बढ़वार रूक जाती है, साथ ही पशुओं की गर्भधारण में कठिनाई होती है। दूध उत्पादन कम होकर उनकी कार्य क्षमता में कमी आ जाती है। कुपोषण की गम्भीर स्थिति होने पर पशु की आकाल मृत्यु तक हो सकती है। इससे बचने के लिए गाय भैंसों को संतुलित आहार उनकी शारीरिक व उत्पादन की आवश्यकतानुसार दिया जाना आवश्यक है। हरा चारा, सूखा चारा तथा बांटे का सम्मिश्रण पशु के शारीरिक भार व उत्पादन के अनुसार गणना कर दिया जाना चाहिए। संतुलित आहार का दाना मिश्रण पशुपालक अपने स्तर पर भी मोटे अनाज,चापड़,खल,चूरी आदि का सही अनुपात में विशेषज्ञ की सलाह से उचित मात्रा में मिलाकर बना सकते है। जिसमें 2 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण व 1 प्रतिशत नमक को आवश्यक रूप से संतुलित आहार के बांटे में मिलाया जाना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत दिसम्बर, 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. रजनी जोशी (09414253108) जनस्वास्थ्य विभाग	भेड़ों व बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग एवं उनकी जनस्वास्थ्य उपयोगिता	04.12.2014
2	प्रो. बसन्त बैस (09413311741) पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग	पशु गृह अवशिष्टों का उपयोग एवं प्रबंधन	11.12.2014
3	प्रो. टी. के. गहलोत (09414137029) निदेशक क्लिनिक्स	बछड़ों में होने वाले शल्य रोग एवं उनकी रोकथाम	18.12.2014
4	प्रो. सी. के. मुरड़िया (09001862000)	भैंसों में नियमित प्रजनन कैसे करायें	25.12.2014

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : दिसम्बर, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. त्रिभुवन शर्मा द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. त्रिभुवन शर्मा